आधुनिक संस्कृत साहित्य में हास्यव्यÂय

सुभाष यादव*

परिवर्तन सदैव गतिमान रहने के साथ–साथ व्यापकता को समेटे रहता है। समय के प्रभाव से स्वरूप में परिवर्तन आ ही जाता है, चाहे विषय कितना ही गम्भीर क्यों न हो?

संस्कृत वांग्मय भी इसका अपवाद नहीं है। काल के प्रभाव से वैदिकसाहित्य लौकिकसाहित्य के पथ से पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तक पहुँचा, स्वातन्त्र्योत्तर काल में पारम्परिक विधाओं के साथ–साथ नवीन विधाओं का आविर्भाव संस्कृत भाषा में हुआ। इस काल की प्रमुख विधाओं में छन्दोमुक्त कव्य, क्षेत्रीयकाव्य, पैराडी, हास्यव्यÂय,शोकगीत, इत्यादि प्रमुख विधाएँ हैं।

यद्यपि आधुनिक संस्कृत विधाएँ पारम्परिक संस्कृत विधाओं में परिलक्षित होती रही है फिर भी आधुनिक संस्कृत कविता में इसका स्वरूप और स्पष्ट होने के साथ–साथ लोकप्रिय भी है। प्राचीनकाल में जहाँ हास्यव्यग्य विधा के एक–दो श्लोक ही प्राप्त होते हैं वहीं आधुनिक काल में इस विधा को लेकर शताधिक काव्य लिखे जा चुके हैं। 1940 ई0 में जन्मे श्री प्रशस्यमित्र शास्त्री ने संस्कृत कवि सम्मेलनों में हास्य कवि के रूप में इस विधा को लोकप्रिय बनाया।

द्रष्टव्य–कलानाथशास्त्री आधुनिक साहित्य का एक दृष्टिपात इलाहाबाद संग्रहालय।

डॉ0 प्रशस्यमित्र शास्त्री ने अत्यन्त सरल भाषा और सुबोध शैली से दैनिक व्यवहार के विषयों को परिहास का विषय बनाया। श्री मित्र ने हास्यव्यंग्य का अधिकृत करके शताधिक श्लोक लिखे और बाद में उनको एकत्र करके पुस्तक रूप में आकार दिया। उनकी प्रमुख हास्यव्यग्य कविता संग्रह हासविलासः संग्यविलासः तथा कोमलकष्टकावलिः है।

श्री प्रशस्यमित्रशास्त्री ने संस्कृत की अनेक प्राचीन सूक्तियों का नवीन हास्य सन्दर्भ में अत्यन्त सुन्दर प्रयोग किया। नेताओं पर व्यÂय करते हुए उन्होंने लिखा है–

विद्वत्व×च नृपत्व×च नेत तुल्यं कदाचन।
गृहेऽपि नार्च्यते विद्वान् नेता सर्वत्र पूज्यते।।

कोमलकष्टकावलिः

शोधच्छात्र रा.सं0सं0 गXानाथ झा परिसर चन्द्रशेखर आजाद पार्क इलाहाबाद

हास्यव्यंग्य कविता के एक और प्रमुख रचनाकार पश्चिम बंगाल के सुकवि दीपकघोष हैं। उन्होंने अपने प्रमुख रचना 'राजनीतिलीलाशताधिकम्' नामक काव्य में आधुनिक युग में प्रचलित राजनीति का कलुषित रूप को अमिट कीर्ति व अनन्त शक्ति सम्पत्र बताते हुए कहा है–

भो राजनाते! प्रणम्याहं त्वां पुनः पुनस्ते पदयोः प्रणामः।
अनन्तकीर्तिरमिताश्च शक्तीः शक्नोमि मातुं न तव क्षमस्व।।

श्रीदीपकघोष, राजनीतिलीलाशताधिकम्

इस विधा के एक और पोषक कवि पण्डित रामवतार शर्मा हैं, इस विधाको उन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर लोकप्रियता की पराकाष्ठा पर पहुँचाया। इस विधा की उनकी प्रमुख रचना मुद्गरगीतम् है। जिसमें शर्मा महोदय ने विलक्षण, प्रखर व्यग्य प्रहार से देश के प्रति गम्भीर स्नेह समसामयिक स्थिति का वर्णन किया है।

'मुद्गरगीतम्' में मन्दाक्रन्ता छन्द में लिखे 148 श्लोक हैं, व इसका विभाजन पूर्वमुद्गर–मध्यमद्गर–उत्तमुदगर के रूप में है। पाखण्ड दम्भ पर प्रहार करते हुए उन्होंने सोत्प्रास शैली में लिखा है–

नीतिव्याख्यासमितिषु तथा धर्मावार्तासद सु
प्रायो नाट्येण्वथ शवखनिग्वाश्रमेषूद्भटानाम्।
व्यर्थं क्षिप्त्वा भरतसुधाद्रत्यकोटिः स कीटो
देश प्रेमोल्बण भणितिभिर्नाशयामास विधाम्।।

पूर्वमुद्गर–श्लोक 15

बीसवीं शताब्दी में संस्कृत कविता राज्याश्रयत्व, व्यक्त्याश्रयत्व को त्याग करके सामाजिक चेतना के प्रति गम्भीर होती गयी, श्रेष्ठ विद्वानों ने आधुनिक जीवन के विसगतियों तथा समाज में प्रचलित द्वैधमानदण्डों पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। ऐसे श्रेष्ठ विद्वानों में कमलेशदत्त त्रिपाठी, भास्काराचार्य त्रिपाठी, राधाबल्लभ त्रिपाठी, हर्षदेव माधव श्रीमहेन्द्रप्रताप सिंह 'गांगेय' जनार्दनप्रसाद 'मणि' प्रवीणपण्ड्या इत्यादि प्रमुख रूप से विद्यमान हैं। आधुनिक संस्कृत कविता के रूप में इन विद्वानों ने निर्भीक स्वर में समाज के शोषण तन्त्र पर प्रहार किया है।

प्रो0 अभिराजेन्द्र मिश्र 'शालभ×जका' नामक काव्य संग्रह में प्रणययुक्त सौहार्द के प्रति प्रश्न करते हुए लिखते हैं कि–

हेमवस्तु कीदृशं सौह्रदम्?
मोधशंसिन्यहो कीदृशं सौह्रदम्।।
घोषयत्यायगा सिन्धु सगेन्मदा
मातृवेश्मन्यहो कीदृशं सौह्रदम्

पालकं माऽनुकर्मा अजापुत्र! भो
प्राणघातिन्यहो कीदृशं सौहृदम्।
.............शालभञ्जिका 142 पृष्ठ

प्रो0 अभिराजराजेन्द्र मिश्र

इसी प्रकार प्रो0 रेवा प्रसाद द्विवेदी मनुष्य की परपीडा से सन्तुष्टि की कुण्ठित भावना का मनोरम चित्रण अपनी कविता ग्रन्थ में इस प्रकार परिलक्षित किया है–

अहमस्मि न हन्त हन्ततुष्ट
श्चरितार्थं परिलक्ष्यंमो स्वगेहे।
परितुण्यति चेतना मदीया
परिवेशे यदि वहिनमुत्सृजामि
ममधेनुरतीव पुष्टगात्री
सेतमेतन्मम नास्ति तोषणाय
प्रतिवेशि विडाल प्रपोष...
परिदग्धाम्बक –शूल–पीडितस्य

प्रो0 रेवा प्रसाद द्विवेदी प्रमथ, 30, 31, पृष्ठ 56

इसी प्रकार 'गाग्य' कवि श्री महेन्द्र प्रताप सिंह ने अपने लुप्त तन्त्रम् नामक काव्यग्रंथ में देश के नेता की प्रष्टता तथा जनता की पाश्चात्य अनुकरणता पर व्यंग्य करते हुए लिखा है–

मूढ़ा राष्ट्रनेतारः नानाभोगपरायणाः।
उत्कोचं प्राप्य तेभ्योऽल्पं विक्रीणन्ति स्वगौरवम्।।
असिमतां राष्ट्रियामेते स्वाभिमानं च संस्कृतिम्।
नाशयन्ति समग्रेण पश्चिमस्यानुयायिनः।।

श्री महेन्द्र प्रताप सिंह, लुप्ततन्त्रम् 69–70

इसी प्रकार कमलेश दत्त त्रिपाठी महोदय ने राजनीति पर व्यग्य करते हुए अपने काव्य 'धन्याममेयंधरां' अपने उद्‌गार प्रकट किये हैं–

यत्र ध्वाक्ष्ङनिमा विरावयहवो नेतृत्व संसाधकाः
उत्कोचैकपरा जनरच हरणे पारÂताः साहिबाः।
पू×जीस्वामि हितैकाधनरताः कुम्भोदरा नायका
राजन्ते खलु राजनीति भुजगा धन्या ममेयं धरा।।

कमलेश दत्त त्रिपाठी ''धन्याममेयंधरा''

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बीसवीं शताब्दी के संस्कृत वाÂमय में राजनीति चेतना के सम्पर्क का आविर्भाव हास्यव्यÂय कविता के रूप में परिलक्षित

होता है। पारम्परिक विधा में निष्णात विद्वान् नये युग में काव्यसर्जना के लिए नयी धरित्री व नवीन विधा का सूत्रपात्र हास्यव्यंग्य कविता के रूप में किया।

इस विधा की प्रसिद्धि व्यापक है। म×च पर काव्य पाठ के साथ ही संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं में यह बहुसमादृत है। समय के साथ यह और भी परिष्कृत होकर विद्वानों सुधीपाठकों के हृदयानुराग के साथ–साथ समाज व राष्ट्र निर्माण में संस्कृत भाषा के गौरव को अक्षुण्ण रखने में सर्वथा सहायक सिद्ध होगी ऐसी आशा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास पं. जगन्नाथ पाठक उ0प्र0 सं.सं. लखनऊ 2000।
2. कोमलकष्टकावलि डॉ. प्रणस्यमित्र शास्त्री अक्षयवट प्रकाशन इलाहाबाद 1990।
3. अर्वाचीन संस्कृत साहित्य दशा एवं दिशा, म×जुलता शर्मा परिमल पब्लिकेशन्स नई दिल्ली 2004
4. अर्वाचीन संस्कृत साहित्य महाकाव्यमनुशीलनम्–सागरिका समितिसागर 1981।
5. शालभ×िजका वैजयन्त प्रकाशन इलाहाबाद 2006।